इन्टरव्यू-१ बजरडीहा
कैसेट संख्या १

प्र: आपका नाम बताइए ?
ज: मेरा नाम मौहम्मद जुबैर हैं।

प्र: आपकी उम्र कितनी होगी ?
ज: मेरी उम्र आठ साल हैं।

प्र: आप बुनकारी का कौन सा काम करते हैं या डिजाइन करते हैं ?
ज: हम बुनकारी करते हैं।

प्र: आपके पिताजी भी बुनकारी करते हैं ?
ज: हाँ, हमारे पिताजी भी बुनकारी करते थे, दादा जी हमारे डिजाइनर थे तथा बड़े वालिद भी डिजाइनर थे।

प्र: आप बुनकारी करते हैं ?
ज: हाँ, हम बुनकारी करते हैं।

प्र: आपके परिवार में कितने लोग हैं
ज: हमारे परिवार में हमारे पांच बच्चियां व चार लड़के है वह दो हम मिलकर ग्यारह लोग हैं।

प्र: क्या आपके लड़के लोग भी बुनकारी में लगे हैं ?
ज: हां, हमारे बच्चे भी बुनकारी में लगे हैं।

प्र: चारों लड़के बुनकारी में लगे हैं।
ज: हां, समझ लिजिए कि जो पढ़ता है वो भी इसमें लगा हुआ है।

प्र: अच्छा जो हाई-स्कूल में पढ़ रहा है वो?
ज: जी नहीं, वो जो छह-सात में पढ़ रहा है अभी छोटा है जब वो आता है तो वो भी लग जाता है।

प्र: अच्छा तो आप उसे डिजायनिंग सिखा रहे हैं ना ?
ज: नहीं उससे बड़ा लड़का जो है हमारा बड़े लड़के से छोटा वो डिजाइनर है लेकिन उसका काम चलता नहीं है इसलिए उसे हमने बुनकारी में लगा दिया है।

प्र: अच्छा आपके पास बुनकर कितने हैं ?
ज: चार बुनकर हैं, अभी तीन थे आज से एक नया आया है।

प्र: कुल करघा कितना है आपका ?
ज: छह करघा है।

प्र: एक आप व चार आपके लड़के ?
ज: जी नहीं, मैं काम नहीं करता लड़के व कारीगर ही करते हैं।

प्र: इसके अलावा कतान आपकी खुद की होती है या लेते हैं कहीं से ?
ज: नहीं, बाजार से लेते हैं।

प्र: मतलब गिहस्ता से लेते हैं या बाजार से ?
ज: नहीं बाजार से लेते हैं।

प्र: अच्छा एक साड़ी की कुल लागत कितनी आती होगी ?
ज: साढ़े ग्यारह सौ से पौने बारह सौ कि होती है तथा उसकी बिक्री सवा बारह सौ कि होती है।

प्र: अच्छा तो मतलब सिर्फ पचास रुपया ?
ज: जी हां, पचास रुपया का ओवर रहता है और वो भी समझ लोग कि अगर दाग धब्बा निकल आया तो पचास रुपया छोड़वाने में ही लग जाता है। हाय मतलब हम लोगों को केवल मजूरी लगती है। अब वो भी किसी जोड़ पड़ गया तो 800-700 की साड़ी बिकती है तो समझ लिजिए कि साढ़े ग्यारह सौ रुपया अपने उसमे लागत लगाई और बेचा सात-आठ सौ में

प्र: एक साड़ी कितने दिन में बन जाती हैं ?
ज: लगभग छह-सात दिनों में बनती है लेकिन हमारे यहां सात-आठ दिनों में बन जाती हैं।

प्र: जैसे सात दिन आठ दिन में एक साड़ी बन जाती है तो कुल करघे है तो कुल मिल कर पूरे करघे से जितनी साड़ी बनती है तो लागत निकाल कर आपकी कितनी आमदनी हो जाती होगी ?
ज: आमदनी वैसा है कि बच्चे लोग जो काम करते हैं, समझ लिजिए कि 1500-1500 रुपया महीना समझ लिजिए। दो बच्चे काम कर रहे तो 3,000 महीना हो जाता है। यही हमारी आमदनी है और समझ लिजिए कि हमारा तो खर्चा 200 रुपया रोज का है आप बताइए कि कुछ नहीं अब कहां से इसकी पूर्ति होती है ये तो कुदरत जाने।

प्र: हाँ, परिवार तो आपका बड़ा है।
रूकावट
ज: हाँ कभी इधर से खर्चा करो तो कभी उधर से उसमें शादी ब्याह करना हो अभी गर्मी में शादी किया।
शुरू
हाँ, शादी ब्याह में खर्चा होता है और उसके बाद जिसकी जितनी कमाई हो उस हिसाब से खर्चा करता है और हम लोगों के यहाँ कुछ लोग लड़की को खाली जोड़ा में भी विदा कर देते हैं बहुत से लोग बहुत से देते है हमारे यहाँ दहेज की कोई लेन देन नहीं है कि इतना दोगे तो शादी होगी हमारे तो बस अगर लड़की पंसद आ गई तो उन्होंने कहा कि हम शादी करेंगे।

प्र: अच्छा बुनकारी के अलावा भी कहीं से कोई आमदनी आती है जैसे गाँव से या खेत से या बुनकारी के अलावा भी कुछ करते हैं ?
ज: जी नहीं हमारे पास ना खेत है ना बुनकारी के अलावा कोई कार्य है केवल बुनकारी है।

प्रः मतलब पूरी निर्भता बुनकारी पर हैं ?
जः जी हां।

प्रः अच्छा आप बता रहे थे कि कुछ दिन पहले आप कोई दुकान खोले थे तो वो किस लिए खोले थे क्यों आप चले गए थे ?
जः जी हां हम बचपन में यानी 1972 में बल्बा हुआ था यानी रायट हुआ था हमारा सब लुट गया था केवल तन में कपड़ा था उस वक्त हम दोनों व एक बच्चा था उस समय कमलापति त्रिपाठी यहाँ के वजिरे आला थे उन्होंने 200 रुपया दिया था तो उसी टाइम से 200-250 से दुकान खोली और अल्लहा ने हमें इतना दिया कि गृहस्थी हमारी चलती रही हाँ बचा के कुछ नहीं रख पाये।

प्रः तो जैसे स्थिति बनी आप बुनकारी में आ गए ?
जः जी हाँ देखा कि हमारी दुकान बंद हो गई तो बुनकारी में चले आए।

प्रः तो कमलापति त्रिपाठी ने जो मदद की थी वो सरकारी थी व्यक्तिगत ?
जः नहीं वो सरकारी थी सभी जिनके घर जला था लुटा था उन सबको मदद मिली थी।

प्रः तो क्या इस तरह कि सरकारी मदद अभी भी है ?
जः नहीं- जैसे सुनने में आता है कि कोपरेटिव है या बैंक से लोन मिलता है, तो वो सब कोई फायदा - वो सब हम लोगों को कोई फायदा नहीं है। नहीं कहीं से लोन मिलता औन लोन लेने में इतना घपला है कि आदमी घबरा कर खुद वापस चला आता है। अच्छा कोपरेटिव तो अपने पास है नही या कोपरेटिव हम लोगों ने बनाया भी नहीं।

प्रः और कभी सोचे भी नहीं कोपरेटिव बनाने की कभी सोची नही या बातचीत नहीं हुई ?
जः बातचीत कई दफा हुई लेकिन सब के बाद हमें कोई फायदा नहीं होगा जो होगा सब उन्ही को होगा।

प्रः अच्छा तो इसलिए कभी सोचा ही नहीं ?
जः हाँ, इसलिए कभी सोचा ही नहीं।

प्रः अच्छा ज्यादतर लोग ये बता रहे हैं कि ये बुनकारी कि हालत कुछ दिनों या कुछ सालों में खराब हुई है, तो कब से ये खराब हुई है हालत पहले तो कभी नाम था स्थिति भी ठीक थी तो कब से ऐसी स्थिति आई है लोग भूखों मर रहे हैं।
जः हम समझ रहे हैं करीब-करीब दस सालों से ये हालत चल रही है, दस साल पहले कुछ चलता था लेकिन धीरे-धीरे बनारसी साड़ी की हालत खराब हो गई
रूकावट
जब से लूम चल गई
शुरू
हां, जब से लूम चला, हां लूम से भी फायदा है कि लूम की साड़ी में चार मजदूर मिलकर साड़ी बनाते हैं कोई डिजाइन बनता है उसमे कोई नुकसान नहीं है लेकिन हम लोगों की खास जो असल बनारसी साड़ी है उसमें बहुत नुकसान है।

प्रः लूम से?

ज: नहीं लूम से नहीं।

प्र: तो कारण क्या हैं ?
ज: जब कभी रेशम मंहगा हो जाता है तो कभी कहीं जंग छिड़ गई तो कहीं बाढ़ आ जाती तो इसी सब से हम लोगों का हालत खराब हो जाता है।

प्र: दंगा-बंगा तो दूर की बात है हम को लगता है कि रेशम वगैरह जो मंहगा होता है या एक्सर्पोट में जो प्राबलम है उसके कारण ये स्थिति आ जाती है ?
ज: हां कुछ तो इससे भी है कि इर्म्पोट एक्सर्पोट बंद होने से माल आ-जा नहीं पाता, माल फिर कौन लेगा।

प्र: और उस पर दंगा का भी प्रभाव होता है ?
ज: हां जैसा गुजरात में हुआ उसका असर पड़ा समझ लिजिए कि दंगा वहां हुआ और यहां लोग भूखें मर रहें हैं। इसे बहुत नुकसान होता है और पब्लिक को समझ नहीं आता। दंगा भी वही करते है जो लोफर होते हैं शरीफ आदमी तो दंगा करेगा नहीं पुलिस भी शरीफ को ही पकड़ती है।

प्र: अच्छा बनारसी साड़ी की बिक्री बढ़ी है कि नहीं ?
ज: इस वक्त घट गई।
रूकावट
ये तो रेशम के ऊपर है कि रेशम का दाम गिरता है तो रेट गिर जाता है और जब बड़ता है तो बढ़ जाता है। इस वक्त ज्यादे गिर रही है जो साड़ी 1500 की थी वो 1000 रुपये में बिक रही हैं।

प्र: तो क्योंकि इसका असर भी पड़ता है, दस सालों में अगर बनारसी साड़ी की सेल घटी हो वो हो सकता है इसके कारण भी स्थिति बिगड़ी हो ?
ज: रूकावट
हां इसका भी कारण है कि सेल घटी तो है तो कम लोग इसे खरीदते है हल्की साड़ी व प्रिन्टेड साड़ी की ज्यादे डिमांड है। 400-500 वाली की डिमांड है। मेन बनारसी साड़ी की जो डिमांड दिन ब दिन घट रही है।

प्र: अच्छा आपको इसका कोई समाधान लगता है कि जो अभी बुनकरों की स्थिति हो गई है उससे निजात या कोई कापरेटिव बनाकर या कुछ भी कर कि इस स्थिति से निजात पा सके ?
ज: गोवरमेंट तो बहुत सा प्लान बनाती है कि बुनकार को फायदा हो लेकिन वो बुनकर तक पहुँच नहीं पाता और पहुँचता भी है तो उसमें इतना टाईम लग जाता है कि वो बेचारा वह सोचता है कि भईया जो हम कर रहे हैं वहीं करे इसमें कोई फायदा नहीं है। सोचता है कि ऐसा कोई काम हो जाए कि जिसमें हमारा फायदा हो लेकिन उसमें इतनी परेशानी है कि वो घबरा कर बैठ जाता है।

प्र: कभी आपने सहायता ली है सरकार से या काई करघा लगाने में ?
ज: नहीं कभी नहीं लिए एकाध बार सोचा भी कि और दौड़ धूप भी किया लेकिन उसमें भी कितना हमें दोगे और 200-250 रुपये उसी में चले जायेंगे एक बार दिया भी था उसमें 600 रुपये दिए यही हमारा लड़का है बड़े 600 रुपया एक आदमी को 600 रुपया वो भी चला गया।

प्र: ऋण वगैरह ही मिलता है ?

ज: हाँ मिलजा है लेकिन उन्ही को मिलता है जो कापरेटिव के मेम्बर है क्योंकि सरकार उन्हीं को जानती है आम पब्लिक को तो जानती नहीं वो भी जिन्हें मिलता ऋण मिला जो उसका कार्यकर्त्ता है उसके पास जितना आता है उसमे से वो कितना देता लेता है वहीं जाने।

प्र: आपने कभी प्रयास नहीं किया ?
ज: हमने कभी उसकी तरफ ध्यान ही नहीं दिया।

प्र: अच्छा आपको कभी ऋण की जरूरत नहीं पड़ी ?
ज: मतलब हमारे यहां ब्याज लेना देना हराम है।

प्र: वैसे कर्ज वगैरह कि जरूरत पड़ती है तब ?
ज: हम उसी से लेते है जिसे ब्याज देना ना पड़े वो भी रिश्तेदारी से, बैंक से आदि से लेते हैं अभी लड़की की शादी की उसमें अपने बहन के लड़के से कर्ज लिया क्योंकि उसमें ब्याज नहीं देना पड़ता।

प्र: अब आपका काम ठीक चल रहा है ?
ज: चल क्या रहा है बस कोई दिल से खुशी नहीं है बस रोजी रोटी चल रही है।

प्र: कभी ऐसा सोचा की बुनकारी छोड़ दें ?
ज: जी हाँ हम तो बच्चों को यही सिखलायें लेकिन तकदीर में नहीं है दूसरा काम तो क्या करे और इतना पढ़े लिखे भी नहीं है कि कोई नौकरी करे और नौकरी भी करेंगे तो क्या मिलेगा।

प्र: साड़ी बिकने के कितने दिनों बाद पैसा देते हैं - क्या एडवांस देते हैं ?
ज: नहीं एडवांस नहीं देते एक दो रोज बाद भी दे देते है या पैसा मौजूद है तो उसी समय भी दे देते हैं। रिश्ता पर निर्भर करता है तो वो अपना रोलिंग बनाये रखता है उसके पास 50-60 काघे है वो अपना सब कुछ खर्चा निकाल लेता है। अब वह चाहे कि साढ़े बारह सौ कि साड़ी बेचे तो 2-3 महीना लग सकता है लेकिन यदि हजार ग्यारह सा की बेचे तो एक दो रोज मे ही बेच सकता है।

प्र: अच्छा आपके बाप-दादा के जमाने में भी यही स्थिति थी की अच्छी थी ?
ज: हमारे बाप-दादा के जमाने से तो सुनते थे कि बारिश के समय वे काम नहीं करते थे चना वना इतना किफायत था कि उसे खरीद कर चलाते थे।

प्र: यानि उनकी ठालात ठीक थे ?
ज: ठीक क्या थी बस चलता था लेकिन आज से बेहतर था उस समय पैसा टुकड़ा चलता था हम बचपन में पैसा टुकड़ा देखा हैं। एक रुपया हमारे लिए बड़ी चीज थी लड़कई में। घर से कभी पैसा मिले तो एक पैसा मिलता था हाँ। या टुकड़ा अधेला मिलता था। तो उन लोगों की हालत और वह काम दूसरा था। उस समय राजा महाराज का काम हुआ करता था हाथ से कढ़ाई होती थी ये मशीन का काम नहीं था उन लोगों का।

प्र: तो इस समय भी करघा वाला हाथ से ही हो रहा है ना ?
ज: हाथ से नहीं था जैसे एक हाथ फेकें ऐसे लेकिन उस पर जो डिजाईन बनाते है ये वो हाथ से बनाते थे, दूसरे हिसाब से बनती थी जैसे कालीन देखें है ना बनते वैसे ही साड़ी का काम पहले होता था डिजाइन सामने रखकर

साड़ी बनती थी उसी तरह बनारस में काम होता था।

प्र: तो वो कैसे बदल गया ?

ज: बदल गया वह काम अब कर नहीं पायेंगे, जब नए फैशन में आ गया तो मशीन से कढ़ाई होने लगी।